पश्चिम एशिया में नई व्यवस्था

लेखक-स्टैनली जॉनी (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

27 फरवरी, 2019

"परिदृश्य अब त्रिध्रुवीय बन चुका है, जहाँ सऊदी अरब, ईरान और तुर्की अपने-अपने प्रभाव के लिए मुकाबला कर रहे हैं।"

2010 और 2011 के अंत में जब अरब की सड़कों पर विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ, तब ट्यूनीशिया के जीन एल एबिडीन बेन अली और मिस्र के होस्नी मुबारक जैसे बड़े तानाशाहों को सत्ता छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन सरकार में परिवर्तन से यह भी सुनिश्चित था कि इससे क्षेत्रीय गतिशीलता भी बदल जाएगी। कई लोगों ने सोचा था कि 'स्थिरता' (पढ़ें: एकल परिवारों या तानाशाहों का दशकों पुराना अपरंपरागत शासन)में निहित पुरानी व्यवस्था उभरते लोकतंत्रों द्वारा समाप्त हो जाएगी। आठ साल बाद, यह

स्पष्ट हो चुका है कि अरब की दुनिया बदल गई है, लेकिन उस तरह से नहीं, जिस तरह की भविष्यवाणी कईयों ने की थी। पुरानी अरब दुनिया की संरचनाएं या तो नष्ट हो गई हैं या तो अव्यवस्थित हो गई हैं, लेकिन ये अरब देशों में घरेलू राजनीति को मौलिक रूप से बदले बिना हुई हैं।

इतिहास की पृष्ठभूमि

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बाद से जब तुर्क सुल्तानों ने अपना ध्यान पूर्व से पश्चिम में स्थानांतरित कर दिया था, तब अरब क्षेत्र में कई शक्ति केन्द्र थे। अरब क्षेत्र में तुर्क के विनाशकारी प्रभाव ने एक निर्वात का निर्माण किया, जो उभरते हुए क्षेत्रीय नेताओं:- जैसे कि मिस्र के मुहम्मद अली, मध्य अरब और भूमध्यसागरीय क्षेत्र में हशीमाइट्स और अरब प्रायद्वीप में अल-सऊद परिवार द्वारा भरा गया था। युद्ध के बाद के पश्चिम एशिया में, मिस्र सबसे प्रभावशाली अरब देश बना रहा। जॉर्डन के हशीमाइट्स साम्राज्य ने भूमध्यसागरीय क्षेत्र में अपना प्रभाव बनाए रखा, जबकि सऊदी अरब अरब प्रायद्वीप तक ही सीमित था। जब मिस्र और जॉर्डन पतन की कगार पर थे, खासकर 1967 में इजरायल के साथ युद्ध के बाद, इराक का बाथिस्टों के नेतृत्व में उदय हुआ। सद्दाम हुसैन, जो 1979 में इराक के राष्ट्रपति बने, मिस्र के पूर्व नेता गमाल अब्देल नासर,जिन्होंने पैन अरबीवाद का आह्वान किया था, के अधूरो छोड़े गये काम को पूरा करने के लिए उत्सुक थे। हुसैन ने 1980 में क्रांतिकारी ईरान के साथ अधिकांश अरब देशों की ओर से युद्ध शुरू किया। हालांकि, इन देशों के बीच गहरे विभाजन थे, संमिलन का एक बिंदु 'स्थिरता' ही था। न तो सम्राट और न ही तानाशाह अरब दुनिया में सत्ता पर अपनी पकड़ के लिए कोई खतरा चाहते थे।

यह व्यवस्था अरब विरोध के बहुत पहले ही शुरू हो चुकी थी। 1990 में कुवैत पर आक्रमण करने के साथ ही हुसैन ने अरब देशों के बीच गैर-आक्रमण की पाबंदी को तोड़ दिया था। जिसे 2003 में इराक पर अमेरिकी आक्रमण ने उसे पछाड़ दिया और उसके शासन को दफन कर दिया। इसके बाद अरब में उठी विरोध की लहर ने उन परिवर्तनों को तेज कर दिया, जो पहले से ही चल रहे थे। मिस्र 2011 से शुरू होने वाली अस्थिरता के लंबे दौर से गुजरा था। सबसे पहले, एक क्रांति श्री मुबारक को सत्ता से बेदखल करते हुए मुस्लिम ब्रदरहुड को सत्ता में ले आयी। और फिर सैन्य नेता अब्देल फत्ताह अल-सिसी द्वारा एक जवाबी क्रांति देश को वापस एक वर्ग में ले गई। इस प्रक्रिया ने, मिस्र को बुरी तरह से झकझोर के रख दिया अर्थात् सरकार ने नैतिक अधिकार खो दिया, इसका क्षेत्रीय रुख कमजोर हुआ और आर्थिक समस्याओं के बढ़ने के कारण, हताशा से घिरे श्री सिसी को मद्द के लिए खाड़ी के राजाओं के पास जाना पड़ा।

सऊदियों का शासनकाल

सऊदी अरब, सिसी शासन की मद्द करने में सबसे आगे था। एक विश्वसनीय सहयोगी, श्री मुबारक के पतन से सऊदी शुरू में चौंक गए थे। सउदी और संयुक्त अरब अमीरात दोनों मिस्र के राष्ट्रपति मोहम्मद मुर्सी की एक मुस्लिम भाई की चुनी हुई सरकार से छुटकारा पाना चाहते थे। उन्होंने 2013 की जवाबी क्रांति का समर्थन किया और श्री सिसी को सहायता के साथ सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने में मद्द की। इस घटना में, हमारे पास अब एक ऐसा कमजोर मिस्र देश है, जो एक सैन्य तानाशाह द्वारा शासित है और सऊदी-यूएई अक्ष पर तेजी से निर्भर है।

अरब दुनिया में, सऊदी अरब को अब अपने नेतृत्व के लिए एक वास्तविक चुनौती का सामना नहीं करना पड़ रहा है। सऊदी इस नेतृत्व को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक रहे हैं। उन्होंने मई, 2017 में रियाद में एक विशाल अरब शिखर सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भी भाग लिया था। अमेरिका और अरब देशों ने मध्य पूर्व रणनीतिक गठबंधन बनाने की योजना की भी घोषणा की थी, जिसे अरब नाटो भी कहा जाता है, जो सऊदी नेतृत्व के तहत एक अंतर्राष्ट्रीय अरब सुरक्षा इकाई है। इस ब्लॉक का सामान्य दुश्मन सऊदी अरब का प्रमुख भूराजनीतिक और वैचारिक प्रतिद्वंद्वी ईरान है।

रियाद हाल के वर्षों में ईरान के प्रति आक्रामक रहा है, जिसे ईरान विरोधी अभियान के रूप में समझा जा सकता है। इसे विश्व स्तर पर प्रचारित किया जा रहा है। अमेरिका में सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने ईरानी शासन की तुलना हिटलर के नाजी शासन से की है अरब जगत के भीतर, सऊदी अरब ने स्पष्ट कर दिया है कि वह वैकल्पिक शक्ति केंद्रों को बढ़ने नहीं देगा। सऊदी अरब की विदेश नीति से असहमति रखने वाले छोटे खाड़ी देश कतर को ब्लॉक करने के फैसले को इस पृष्ठभूमि के खिलाफ देखा जा सकता है। सऊदी अरब और यूएई के अलावा, मिस्र भी नाकाबंदी में शामिल हो गया, जो दर्शाता है कि खाड़ी अक्ष पर काहिरा कितना निर्भर है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सऊदी अरब अपने नेतृत्व में एक संयुक्त अरब फ्रंट चाहता है, जिसमें ईरान शामिल होगा और पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका में किंगडम के हितों को अधिकतम करेगा।

त्रिध्रुवीय क्षेत्र

पहला, रियाद ने अरब देशों के बीच अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। लेकिन एक प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति बनने की उसकी जिज्ञासा गंभीर चुनौतियों को बुलावा देती है। समस्या इसकी अपनी अनुभवहीनता से शुरू होती है। सऊदी अरब कभी भी बड़े विचारों का प्रभावी निष्पादक नहीं रहा है। इन सभी वर्षों में, यह या तो अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के अंतर्गत या यू.एस. के अंतर्गत रहा है। अब,

जैसे-जैसे इसने नेतृत्व को अपने हाथ में लेना शुरू किया है, इसकी नीतियां गड़बड़ा गई हैं। कतर नाकाबंदी का परिणाम दिख नहीं रहा है और यमन में युद्ध भयावह है। इसके अलावा, सऊदी अरब के इस्तांबुल वाणिज्य दूतावास के अंदर पत्रकार जमाल खशोगी की हत्या जनसंपर्क आपदा रही है।

दूसरा, 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद से, ईरानी खतरे और असुरक्षा की भावना के साथ रह रहे हैं, जिसने उन्हें पूरे क्षेत्र में प्रभाव के नेटवर्क बनाने के लिए प्रेरित किया है। मजबूत गठजोड़ बनाने और अधिक मजबूत अर्थव्यवस्था होने के बावजूद, सऊदी अरब ईरान के प्रभाव को नियंत्रित करने में असमर्थ रहा है और यह भविष्य में भी ऐसा करने में तब तक सक्षम नहीं हो सकता, जब तक कि अमेरिकी इस क्षेत्र में एक और बड़े युद्ध के लिए तैयार नहीं होते।

तीसरा, आज के पश्चिम एशिया में तीसरा ध्रुव रेसेप तय्यिप एर्दोगन का तुर्की है। तुर्की, जो 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चिम एशिया से पीछे हट गया था, अब यह अपना ध्यान यूरोप से इस क्षेत्र में वापस केंद्रित कर रहा है। यह कतर का एक प्रमुख रक्षा और आर्थिक साझेदार है और इसकी निकटता के माध्यम से सीरिया में मजबूत उपस्थिति है। तुर्की ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सऊदी अरब पर दबाव बढ़ाने के लिए खशोगी हत्या का भी इस्तेमाल किया। देखा जाये, तो तुर्की ने ईरान के साथ तो गठबंधन नहीं किया है, लेकिन इसने आपसी हित के मामलों जैसे- कुर्दिस्तान मुद्दे और सीरियाई संघर्ष पर ईरानियों के साथ सहयोग करने की इच्छा जताई है। दूसरी तरफ, सऊदी अरब के साथ इसके संबंध लगातार बिगड़ रहे हैं।

पश्चिम एशिया का मुस्लिम परिदृश्य अब त्रिध्रुवीय हो गया है। जहाँ सऊदी अरब, अरब दुनिया के नेता के रूप में, पूरे क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करने की कोशिश कर रहा है; ईरान अपने प्राकृतिक उत्थान को कम करने के प्रयासों का विरोध करना जारी रख रहा है और तुर्की अपनी खोई हुई महिमा को फिर से स्थापित करने के लिए फिर से इस क्षेत्र में लौट रहा है। यह बहु-दिशात्मक प्रतियोगिता, यदि टकराव नहीं है, तो आने वाले वर्षों में यह पश्चिम एशियाई भू-राजनीति को एक नया आकार जरूर प्रदान करेगी।

GS World डेस्क...

लुक वेस्ट पॉलिसी

क्या है?

- हाल के समय में भारत ने यूरोप एवं अमेरिका के साथ-साथ पश्चिम एशिया के साथ भी संबंधों को मजबूती देने का प्रयास किया है।
- ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इजरायल, फिलिस्तीन जैसे देशों के साथ भारत ने घनिष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया है। भारत की इस नीति को 'लुक वेस्ट पॉलिसी' का नाम दिया जा रहा है।

भारत की लुक वेस्ट पॉलिसी के सकारात्मक पक्ष

- भारत ने इजरायल के साथ संबंधों को मजबूत बनाया है, किंतु फिलिस्तीन के साथ अपने संबंधों को बिगड़ने नहीं दिया है।
- इसी प्रकार भारत ने ईरान के साथ-साथ सऊदी अरब एवं संयुक्त अरब अमीरात से भी संबंधों को सशक्त स्थिति में रखा है।
- आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा एवं वैश्विक ध्रुवीकरण के संबंध में भारत एवं पश्चिमी एशियाई देशों की चिंतायें एक जैसी हैं।
- भारत एवं पश्चिम एशियाई देशों के बीच पीपुल टू पीपुल कॉन्टेक्ट बढ़ता जा रहा है। भारतीय व्यंजन एवं फिल्में पश्चिम एशियाई देशों में पसंद की जा रही हैं।
- बड़ी संख्या में भारतीय डायस्पोरा पश्चिम एशियाई देशों में निवास कर रहे हैं। ये न सिर्फ भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हैं, बल्कि भारी मात्रा में रेमिटांस भी भारत में भेजते हैं।

भारत की लुक वेस्ट पॉलिसी के नकारात्मक पक्ष

- पश्चिम एशियाई देशों के बीच आपसी संघर्ष लगातार जारी है, जो भारत की नीति को अधिक कारगर नहीं होने दे रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, यमन, सीरिया में गृहयुद्ध जैसे हालात हैं। इसी प्रकार ईरान एवं सऊदी अरब के बीच मतभेद हैं।
- अरब लीग एवं जीसीसी (खाड़ी सहयोग परिषद्) जैसे संगठन निष्क्रिय बने हुए हैं।
- भारत की 'लुक ईस्ट नीति' सफल रही है क्योंकि पूर्व में आसियान जैसा मजबूत संगठन है। जबकि पश्चिम एशिया में आसियान जैसा कोई मजबूत संगठन नहीं है। अतः भारत की 'लुक वेस्ट नीति' की सफलता संदेहास्पद है।

भारत के द्वारा उठाये जाने वाले कदम

- भारत को पश्चिम एशियाई देशों के आपसी विवादों में नहीं उलझना चाहिए तथा प्रत्येक देश से द्विपक्षीय संबंध स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।
- पश्चिम एशियाई देशों के साथ आर्थिक मुद्दों, पीपुल टू पीपुल कांटेक्ट तथा सूचना-प्रौद्योगिकी के मामले में आपसी संबंधों को मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

1. क्षेत्रफल के अनुसार तुर्की पश्चिमी एशिया का सबसे बड़ा देश है।
2. जॉर्डन पश्चिमी एशिया का एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस नहीं पायी जाती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

1. Consider the following statements-

1. According to area Turkey is the largest country of West Asia.
2. Jordan is the only country of West Asia, where Petroleum and Natural Gas are not found.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: वर्तमान में पश्चिमी एशिया में बदलते परिदृश्य को देखते हुए भारत को किस प्रकार की रणनीति अपनाने पर बल देना चाहिए? विश्लेषण कीजिए।

Q. Viewing the present dynamic scenario in the West Asia, adoption of what type of strategy should be emphasised by India? Analyze.

(250 Words)

नोट : 26 फरवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(d) होगा।

GS World
Committed To Excellence